

## जेण्डर का अर्थ

### Meaning of Gender

जेण्डर के शाब्दिक अर्थ पर विचार किया जाय तो यह स्पष्ट होता है कि इसे व्याकरण की दृष्टि से लिंग विभाजन में प्रयुक्त किया जाता है। विविध अर्थों में इसको पैदा करने, जनन करने एवं संभोग आदि से भी जोड़ा जाता है। जेण्डर शब्द स्त्री-पुरुष की विविध गतिविधियों से सम्बन्धित होता है। व्यापक रूप में इसका अर्थ लिंग सम्बन्धी विविध तथ्यों को स्पष्ट करने से होता है; जैसे—स्त्री-पुरुष में असमानता के कारण, उभयलिंगी व्यक्तियों को समाज में अधिकारों की प्राप्ति न होना, समाज में लिंग भेद का समापन न होना, समाज में लिंग भेद की स्थिति बने रहना आदि। इन सभी तथ्यों के बारे में विचार करने की प्रक्रिया जेण्डर से ही प्रारम्भ होती है। जेण्डर एक ओर स्त्री-पुरुष की सृजन में भूमिका को स्पष्ट करता है तो दूसरी ओर समाज में उनकी भिन्नात्मक स्थिति को भी स्पष्ट करता है। व्यापक अर्थ में इसका सम्बन्ध उन सभी गतिविधियों से है जो कि समाज में स्त्री-पुरुष की असमानता को प्रस्तुत करती हैं चाहे वह असमानता समाज में हो अथवा शिक्षा में। विविध विद्वानों एवं संस्थाओं ने भी जेण्डर शब्द का प्रयोग स्त्री-पुरुष की भिन्नता के सन्दर्भ में ही किया है। जेण्डर के अर्थ के सन्दर्भ में विद्वानों द्वारा निम्नलिखित विचार प्रस्तुत किये गये हैं—

(1) प्रो. एस.के. दुबे के शब्दों में, “जेण्डर का आशय लिंग वर्गीकरण या विभाजन की उस स्थिति की ओर संकेत है जिसमें स्त्री-पुरुष की असमानता को सामाजिक, जैविक, श्रम एवं धार्मिक आधार पर व्यक्त किया जाता है।”

(2) श्रीमती आर.के. शर्मा के अनुसार, “जेण्डर लैंगिक विभाजन को व्यक्त करने की एक प्रक्रिया है जिसको सामाजिक, जैविक एवं अन्य विविध आधारों पर प्रस्तुत किया जाता है तथा विविध आधारों पर ही कार्य एवं व्यवहार में भी अन्तर किया जाता है।”

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि जेण्डर शब्द का अर्थ मात्र लैंगिक अन्तर के लिये किया जाता है। ये अन्तर प्रत्येक दृष्टि से जैविक एवं सामाजिक आधारों पर प्रदर्शित किया जाता है। हमारे प्राचीन भारतीय समाज से लेकर वर्तमान समाज तक यह अन्तर बना हुआ है। अतः जेण्डर लैंगिक विभाजन है जो कि विविध रूपों में स्त्री-पुरुष के मध्य अन्तर स्थापित करने का प्रयास करता है।